अगली शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ | सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई | अंक २१

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २३ जुलाअी, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

दूसरी योजनाका छूटा हुआ पहलू

श्री निर्मलकुमार बोस ४ जून, १९५५ के 'विजिल' में 'योजनाका मानव पहलू' पर लिखते हुअे कहते हैं कि "यह बड़ी अच्छी बात है कि दूसरी पंचवर्षीय योजनामें मानव पहलूकी तरफ ज़्यादा ध्यान दिया जा रहा है।" कहनेका मतलब यह है कि अुसे केवल अर्थशास्त्रियों या आंकड़ा-शास्त्रियोंकी योजना नहीं बनने देना चाहिये। अुसे हमारे राष्ट्रीय जीवनकी बुनियादको छूना चाहिये; यह बुनियाद हमारा ग्रामजीवन है। वर्ना हम प्रो० महलनवीसकी अिन बातोंमें विश्वास करनेके भुलावेमें पड़ सकते हैं कि शराबबन्दी भारतमें असंभव है, शराब और अन्य नशीले पदार्थोंसे अधिकसे अधिक आबकारी आय प्राप्त करनी चाहिये, जरूरत हो तो संविधानको बदलकर नमक और जीवनकी दूसरी जरूरी चीजों पर भी कर लगाया जाना चाहिये — वगैरा वगैरा। अब यह तो स्पष्ट है कि ये मत अिस विचारसे पैदा हुअे हैं कि पंचवर्षीय योजना पूर्ण रूपमें नहीं तो मुख्यतः आर्थिक योजना है। दूसरी पंचवर्षीय योजनाको अिस छिपे भयसे बचाना चाहिये। श्री बोस अपने अुपरोक्त लेखमें अुस खतरेकी ओर नीचेके शब्दोंमें अिशारा करते हैं:

> "हालांकि हमारे ग्रामीण और सामाजिक जीवनकी बुनियादमें भारी जड़ता और आलस्य फैले हुअे हैं, जो विघ्न-बाधाओं या दूसरे दोषोंके रूपमें प्रकट होते हैं, फिर भी अगर हम ठीक ढंगसे काम करना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि हम अनाप-शनाप पैसा खर्च करके या अूपरसे सत्ता चलाकर अिन कठिनाअियोंकी अुपेक्षा करनेका प्रयत्न न करें, बल्कि सच्ची समस्याको हल करनेका प्रयत्न करें, जो असलमें अेक मानव समस्या है। अिसके अभावमें बुनियादसे जीवनका पुनर्निर्माण तब तक मुश्किलसे संभव होगा, जब तक भारतीयोंकी वर्तमान पीढ़ी कब्रमें नहीं चली जाती और अैसी नअी पीढ़ी खड़ी नहीं होती, जिसके बचपनके दिन नदीकी बांध-योजनाओं, बड़े बड़े राजमार्गों और खादके विशाल कारखानोंके आसपास बीते हैं। सत्ताके बल पर परिवर्तन किये जा सकते हैं, लेकिन यह चीज अधिकार और हुकूमतको अेक जगह केन्द्रित करती है और अन्तमें सर्वसत्तावाद या तानाशाहीको जन्म देती है। परिवर्तन बुनियादमें हुकूमतका विकेन्द्रीकरण करके तथा लोगोंकी सूझबूझ और क्रियाशीलताको अुत्तेजन और प्रोत्साहन देकर भी किये जा सकते हैं। यही अेकमात्र लोकशाहीका सच्चा मार्ग है। गांधीजीका विकेन्द्रीकरणका सिद्धान्त केवल मनुष्योंकी जरूरतकी चीजोंके अुत्पादन और वितरणसे ही संबंध नहीं रखता, बल्कि अुसका केन्द्रबिन्दु सत्ताका विकेन्द्रीकरण है। अगर कोअी आर्थिक योजना सत्ताके विकेन्द्रीकरणके बिना सफल होती है, अगर बुनियादमें लोग आध्यात्मिक दृष्टिसे निर्बल रहें, तो जीवन-मान अूंचा अुठा देनेसे भी क्या लाभ होगा? क्योंकि 'मनुष्य केवल रोटीके बल पर ही नहीं जीता' यह कथन मनुष्य-जीवनके आध्यात्मिक क्षेत्रके लिअे जितना सच माना जाता है, अुतना ही राजनीतिक क्षेत्रके लिअे भी सच है।"

१–७–'५५ — मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

गांव अेक परिवार बने

[ता० ५–६–'५५ को सुंढीढमिणी पड़ाव (अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

आज हमने अिस गांवकी कहानी सुनी। यह गांव बड़ी आफतसे बचा है। अकालमें यह गांव खतम ही होने जा रहा था। हमारे देशकी हालत अैसी है कि पांच लाख देहातोंमें क्या-क्या घटनायें होती हैं, अिसका अन्दाजा शहरवालोंको नहीं हो सकता है। शहरमें अेक छोटीसी घटना हो जाती है तो वह फौरन अखबारमें आती है। लेकिन अिधर गांवके गांव खतम होते जाते हैं फिर भी अखबारमें खबर नहीं आती है। लेकिन हमें यह जानकर बड़ी खुशी हुअी कि अिस गांवके संकटके समय हमारे कुछ कार्यकर्ता यहां पर दौड़े आये और अुन्होंने कुछ मदद की, जिससे कि गांव बच गया। विशेष गौरवकी बात तो यह है कि यहां पर कस्तूरबा ट्रस्टकी शिक्षण पाअी हुअी बहनें काम करती हैं, हिम्मतके साथ अकेली रहती हैं और गांव-गांव घूमकर गांववालोंको हिम्मत देती हैं।

जिस गांवने संकटका अनुभव किया है अुसको मालूम होता है कि मिल-जुल कर काम करनेका क्या लाभ है। परमेश्वरने संकट भेजकर गांववालोंको यह सबक सिखाया कि भाअियो, तुम लोग गांवका अेक परिवार बनाकर रहो।

अिस जिलेमें हमें काफी गांव सर्वस्व दानमें मिले हैं। अब अुन गांवोंमें कुल जमीन गांवकी बनेगी। काश्त करनेके लिअे हर परिवारको थोड़ी-थोड़ी जमीन दी जायगी, परंतु मालकियत किसीकी भी नहीं रहेगी। जिस किसीके खेतमें मददकी जरूरत होगी वहां पर सब लोग मददके लिअे दौड़े जायंगे, और अगर आगे जाकर गांववाले चाहें तो सारे गांवका अेक खेत भी बना सकते हैं। समग्र ग्राम-दान देनेसे क्या-क्या लाभ होते हैं, वह समझानेकी जरूरत है। अगर लोगोंको अिन लाभोंका ज्ञान हो जाय तो हमारा विश्वास है कि हिन्दुस्तानमें अेक भी अैसा गांव नहीं रहेगा जो अपनी पूरी जमीन दानमें नहीं देगा।

जमीनकी मालकियत मिटाकर सारे गांवकी जमीन अेक करनेसे पहला लाभ तो यह होगा कि गांवकी दौलत बढ़ानेमें बड़ी सहू-

www.vinoba.in

लियत होगी। किस खेतमें क्या बोना चाहिये और कितना बोना चाहिये, अिस बात पर सारे गांववाले सोचेंगे और सब मिल-कर आयोजन करेंगे। गांवकी फसलका कितना हिस्सा बेचना है, अिसका भी विचार गांवकी समिति करेगी। गांवमें खेतीके सुधारके लिअे क्या-क्या करना चाहिये, वह भी सोचा जायगा। किसी खास मौके पर गांवके लिअे बाहरसे या सरकारसे मदद हासिल करनी है तो अैसे गांवोंमें मदद हासिल करनेमें सुविधा होगी। लोग व्यक्तिगत कर्ज नहीं लेंगे। अिस तरह जो सब लाभ होंगे, अुस पर तो ग्रंथ लिखा जा सकता है, परंतु थोड़ेमें हम अितना ही कहेंगे कि समग्र ग्रामदानसे अपना अिहलोकका जीवन सुखी बनानेमें मदद होगी। आजकलकी भाषामें बोलना है तो हम कहेंगे कि अिससे आर्थिक आजादी प्राप्त होगी।

गांवका अेक परिवार बनानेसे दूसरा लाभ यह होगा कि अुस गांवमें परस्पर प्रेम बढ़ेगा और जीवनमें आनन्द आयगा। जब हम किसीका सुख-दुख समझ लेते हैं, अुसमें हिस्सा लेते हैं तो दुख कम हो जाता है और सुख बढ़ता है। सुख और दुख दोनोंमें हिस्सा लेनेसे गांवमें आनन्द बढ़ेगा। आज परिवारमें आनन्द हासिल होता है। आनन्द जो होता है वह अनेकके सहकारसे होता है। जहां हर मनुष्य अपनेको भूल जाता है वहां पर आनन्द निर्माण होता है। अिस तरह गांवका अेक परिवार बननेसे जीवनका आनन्द, रुचि और स्वाद बढ़ेगा। अिसे हम सांस्कृतिक लाभ कह सकते हैं।

गांवका अेक परिवार बनानेसे बहुत बड़ा लाभ तो यह होगा कि लोगोंका नैतिक स्तर अूपर अुठेगा। झगड़े, गाली-गलौज, चोरी आदि सब कम होंगे। आप जानते हैं कि घरके अन्दर चोरी नहीं होती है। लड़केने कोअी चीज खा ली तो अुसे चोरी नहीं कहा जाता है। मां लड़केसे अितना ही कहती है कि तू मुझे पूछकर खाता तो अच्छा होता। अिस तरह जहां गांवका अेक घर बन जाता है वहां चोरी मिट जाती है। अुससे नीति बढ़ती है। आज दुनियामें नीतिका स्तर अितना गिरा हुआ है, क्योंकि लोगोंने अपने आर्थिक स्वार्थके लिअे अलग-अलग घर बना रखे हैं। परसों हमने अेक भिखारीकी गठरी खोलकर देखी तो अुसमें दो आने थे और अेक साबुनका टुकड़ा था, लेकिन अुसने अुन्हें पक्की गांठ बांधकर रखा था। अिस तरह लोग अपने दो चार आने, दो सौ रुपये या दो हजार रुपये हों लेकिन पक्की गांठ बांधकर रखते हैं। फिर छीना-झपटी और चोरियां चलती हैं। लूटनेके और ठगनेके तरीके ढूंढ़े जाते हैं। डाक्टर भी किसी बीमारको देखनेके लिअे जाता है तो कहता है कि पहले अपनी गठरी खोल। अिस तरह लोगोंने अपना अेक संकुचित हृदय बनाया, छोटा घर बनाया, अिसीलिअे दुनियामें झगड़े चल रहे हैं। लेकिन जहां पर जमीनकी और संपत्तिकी मालकियत मिट जाती है वहां पर मनुष्यकी नीति जरूर सुधरेगी। अिस नैतिक लाभको हम सबसे श्रेष्ठ लाभ कह सकते हैं। अगर दुनियाको यह लाभ हो तो दुनिया नाचेगी। क्योंकि आज दुनिया परेशान है। दुनियामें परस्पर स्वार्थकी जो टक्कर चलती है अुससे दुनिया दुखी है और परिणामस्वरूप हिंसा खूब बढ़ गयी है। अिसलिअे अगर हम गांवकी जमीन और संपत्ति गांवकी बना देते हैं, तो सारी दुनियाको नैतिक अुत्थानका रास्ता मिल जाता है।

और अेक बड़ा लाभ होगा जिसे चाहे दुनियाके लोग समझें या न समझें लेकिन हिन्दुस्तानके और खासकर देहातके लोग समझ जायंगे। जब हम कहते हैं कि यह मेरा घर है, मेरा खेत है, अिस तरह मेरा-मेरा चलता है तो मनुष्य आसक्त बन जाता है, कैदी बनता है। लेकिन जब मनुष्य 'मैं' और 'मेरा' यह सब छोड़ देगा और यह कहेगा कि यह सब हमारा है, मेरा कुछ नहीं है, तो वह जल्दी मुक्त हो जायगा। आज सब लोगोंका मन बंधा हुआ है, क्योंकि मेरा-मेरा छूटता नहीं है। छूटनेके लिअे संतोंने कअी अुपाय बताये हैं। फिर भी लोग मुक्ति नहीं पाते हैं। अक्सर कहा जाता है कि घरबार सब कुछ छोड़कर चलोगे तो यह 'मैं' और 'मेरा' छूटेगा। लेकिन अैसी बात नहीं है। अिस तरह भाग जानेसे मनुष्यको मुक्ति नहीं मिल सकती है। मुक्तिकी युक्ति तो यह है कि हम अपना घर छोटा न समझें। सारा गांव हमारा घर है और हमारा जो छोटा घर हम बनाते हैं वह भी सबका है, अैसा समझें। मैं किसीका नहीं और कोअी मेरा नहीं, अैसी बात करनेसे मनुष्य मुक्त नहीं होता। मनुष्य तो मुक्त तब होता है जब वह समझता है कि मैं सबका हूं और सब मेरे हैं। अिसलिअे हमारे पास जो कुछ है वह सारे गांवका है, मैं भी गांवका हूं और गांव मेरा है, अैसी भावना जब बनती है तब मनुष्य आसानीसे मुक्त होता है। यह अेक बहुत बड़ा लाभ है।

विनोबा

तीसरे सेक्टरके लिअे योजना

[तीसरा सेक्टर, जैसा कि अिन पत्रोंमें पहले विस्तारसे समझा चुके हैं, ('हमारी अर्थ-रचनाका तीसरा क्षेत्र' — हरिजनसेवक, १-१-'५५) खादी और दूसरे छोटे पैमानेवाले ग्रामोद्योगोंका राष्ट्रीय सेक्टर है, जो कि हमारी राष्ट्रीय आयका अधिकांश देता है। ये अुद्योग हमारी राष्ट्रीय अर्थरचनाके सबसे ज्यादा मानवीय और जनतांत्रिक सेक्टरका निर्माण करते हैं। बाकी दो सुविदित सेक्टरोंमें — यानी जिन्हें पब्लिक या सरकारी और प्राअिवेट या खानगी कहा जाता है अुनमें — यह बात नहीं है। खेती, खादी और ग्रामोद्योगोंको खानगी सेक्टरमें गिनना, जैसा कि कुछ लोग भ्रमवश करते हैं, गलत है। ये अुद्योग श्रम-प्रधान होनेके कारण जनताके जीवनको सबसे ज्यादा छूते हैं। दूसरे दो सेक्टर, जो पूंजी या अैसे ही अन्य भौतिक साधनोंकी मदद पर चलते हैं, लोगोंके जीवनसे अुतना ताल्लुक नहीं रखते। अिसलिअे सच्ची राष्ट्रीय और मानवीय योजनाको अपना ध्यान मुख्यतया अिस तीसरे सेक्टर पर ही केन्द्रित करना चाहिये। जिसे अभी योजना कहा जाता है, वह तो कुछ बड़े पैमानेवाले सरकारी अुद्योग खोलनेका ही कार्य-क्रम है जिसमें साथ साथ खानगी अुद्योगोंको भी रहने दिया जायगा। जो हो, यह अच्छा है कि सरकार तीसरे सेक्टरको कुछ महत्त्व तो देने लगी है। अुसे अिस सेक्टरकी ओर और भी ज्यादा ध्यान देना चाहिये। दूसरी पंचवार्षिक योजना मुख्यतया अिस सेक्टरके आसपास संघटित की जानी चाहिये। बड़े अुद्योग, बाहरी तौर पर कितने भी बड़े क्यों न मालूम हों, आखिर तो वे स्वाश्रय और स्वावलम्बन पर आधारित राष्ट्रकी बुनियादी अर्थरचनाके गौण अंशमात्र हैं। अतः अुन्हें केन्द्रीय प्रधानता नहीं मिलना चाहिये। अगर हम अिस योजनाको सचमुच जनतांत्रिक बनाना चाहते हैं, तो अितना कम-से-कम होना ही चाहिये। अन्यथा वह राज्यकी अथवा खानगी पूंजीपतियोंकी पूंजीवादी योजना ही होगी।

अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने हमारी अर्थ-योजनाके अिस महत्त्वपूर्ण तथ्यको प्रकाशमें लानेके लिअे जो साहस-पूर्ण प्रयत्न किये हैं, नीचे अुनका विवरण दिया जा रहा है। अुससे कम-से-कम यह बात स्पष्ट होगी कि हमें पश्चिमकी नकल करके राष्ट्रका पैसा बाहरी आकर्षणवाले कार्योंमें बरबाद करनेकी जरूरत नहीं है।

१०-६-'५५

— म० प्र०]

www.vinoba.in

दूसरी पंचवार्षिक योजनाके लिअे अखिल भारत खादी और ग्रामोद्योग बोर्डने जो विकास-योजनाअें तैयार की हैं, वे बतलाती हैं कि १४२.७६ करोड़ रुपयेकी कुल पूंजीके द्वारा ८८.५८ लाख लोगोंको पूरे समयका और अिनके सिवा लगभग ८०,००० लोगोंको आंशिक समयका काम दिया जा सकता है। ये योजनाअें सूती कपड़ा, अून, चावलकी हाथ-कुटाअी, देहाती तेल, चमड़ा, गुड़ और खांडसारी, दियासलाअी, साबुन और हाथ-कागजके अुद्योगोंसे संबंध रखती हैं। बोर्डने ये योजनाअें अिस बातको मानकर बनायी हैं कि प्रत्येक अुद्योगके लिअे अुत्पादनका सम्मिलित कार्यक्रम निर्धारित किया जायगा। यह जानकारी अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग बोर्डको अुसके अध्यक्षने २ जून, १९५५ को दी।

बोर्डके अध्यक्षने योजना कमीशनके अुपाध्यक्ष श्री व्ही० टी० कृष्णमाचारीके साथ बोर्ड और कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स अेडमिनिस्ट्रेशनकी प्रवृत्तियोंके संयोजनके बारेमें, खासकर प्रोजेक्ट और अेक्सटेन्शन योजनाओंके क्षेत्रोंमें खादी और दूसरे ग्रामोद्योगोंके विकासके मुद्दे पर जो विचार-विमर्श किया था अुसका जिक्र किया। अुन्होंने सरकार द्वारा खादी और ग्रामोद्योग विकास कमीशनके निर्माणके लिअे जो बिल पेश किया गया है, अुसका अुल्लेख किया और बतलाया कि अिस बिलका पाठ अुन्हीं शब्दोंमें रखा गया है जिन शब्दोंमें अुसे बोर्डने सुझाया था। यह कमीशन अेक स्टेच्यूटेरी यानी कानूनके अनुसार अपना शासन आप करनेवाली समिति होगी और वर्तमान बोर्ड अिस कमीशनकी सलाहकार समितिकी तरह काम करता रहेगा।

यह बताया गया कि दूसरी पंचवार्षिक योजनामें सूती कपड़ा, अून, चावलकी हाथ-कुटाअी, देहाती तेल, चमड़ा, गुड़ और खांडसारी, दियासलाअी, साबुन और हाथ-कागजके लिअे अुत्पादनके सम्मिलित कार्यक्रम रखनेका सोचा गया है। अिन अुद्योगोंके विकासके लिअे पांच सालमें सब मिलाकर १४२.७६ करोड़ रुपयेकी पूंजी लगेगी और और ८८.५८ लाख मनुष्योंको पूरे समयका तथा ८०,००० को आंशिक समयका काम दिया जा सकेगा। अिस कार्यक्रमका सूती कपड़ेवाला हिस्सा अिस बोर्ड और हाथ-करघा बोर्डके बीचके सहकार पर निर्भर रहेगा। खादी बोर्डने यह विचार पेश किया है कि अुसका सबसे अच्छा तरीका यह होगा कि खादी बोर्डका अेक प्रतिनिधि हाथ-करघा बोर्डमें और हाथ-करघा बोर्डका अेक प्रतिनिधि खादी बोर्डमें रहे।

खादी बोर्ड और कम्यूनिटी प्रोजेक्ट्स अेडमिनिस्ट्रेशनकी प्रवृत्तियोंमें सहकार साधनेके संबंधमें बोर्डके अध्यक्षने अुन निर्णयोंकी चर्चा की, जो कि शिमलामें अभी कुछ ही दिन पहले हुअी प्रोजेक्ट डेव्हेलपमेन्ट कमिश्नरोंकी परिषद्में लिये गये हैं। अुन्होंने बतलाया कि बोर्ड खादी और ग्रामोद्योगोंके लिअे 'ब्लाक' के स्तर पर कार्यकर्ता तैयार कर सकता है। प्रोजेक्ट अेडमिनिस्ट्रेशनको हर वर्ष ५०० प्रशिक्षित व्यक्तियोंकी जरूरत होगी। अब यह बात बोर्डको सोचना चाहिये कि वह अिसमें क्या मदद कर सकता है।

अिस विषय पर बादमें बोर्डके सदस्योंने पूरी चर्चा की और सवालके सारे पहलुओं पर विचार किया। यह निर्णय हुआ कि अिस साल नासिकमें बोर्डके केन्द्रीय विद्यालयमें १०० प्रशिक्षार्थी लिये जायं और अिस तरहकी तालीमकी व्यवस्था दूसरे केन्द्रोंमें कर सकनेकी संभावनाओंकी जांच की जाय।

(अंग्रेजीसे) **सी० के० नारायणस्वामी**

भूदान-यज्ञ
विनोबा भावे
कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०
नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

गांवकी जमीन गांवकी हो

[ता० १-६-'५५ को विक्रमपुर पड़ाव (अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे]

मैंने सुना कि यहां पर कुछ तेलुगू भाषा बोलनेवाले लोग हैं, तो यह जानकर मुझे खुशी हुअी। भूदान-यज्ञका आरम्भ ही तेलंगानामें हुआ था जहां सब लोग तेलुगू बोलते हैं। चार साल पहलेकी बात है। अप्रैलका महीना था। मैं नलगुंडा और वारंगलमें घूम रहा था। छोटे-छोटे गांवोंमें भी हमारा जाना हुआ था। वह गर्म मुल्क है। बाहरकी गर्मी वहां पर है ही, लेकिन अन्दरकी गर्मी भी बहुत ज्यादा है। वहां पर हजारों लोगोंकी कत्ल हो चुकी थी, सारे भूमिवाले भयभीत थे; बहुतसे लोग जंगलमें छिपे हुअे थे और बहुतसे जेलमें थे। सरकारकी सेना अिधर-अुधर घूम रही थी। कम्युनिस्ट भाअी जंगलमें पड़े रहते थे और रातमें आकर कुछ काम करते थे। तो लोगोंको रातमें अुनकी तकलीफ होती थी और दिनमें सरकारके सिपाहियोंकी तकलीफ होती थी। अिस तरह दोनोंके बीच लोग पीसे जा रहे थे। अैसे वातावरणमें चंद लोगोंके साथ हम वहां पर घूम रहे थे। बिलकुल जंगलोंमें भी जो गांव थे वहां भी हम पहुंचे थे, क्योंकि हम चाहते थे कि सब लोगोंके साथ हमारी बातचीत हो।

वहांके कम्युनिस्टोंको हमने समझाया कि भाअियो, गरीबोंका काम तो हम भी करना चाहते हैं। परन्तु आप अपना तरीका बदलेंगे तो आप और हम अेकसाथ होकर हिन्दुस्तानमें काम करेंगे। सरकारके सिपाहियोंको हमने समझाया कि अगर शेरोंकी शिकार करनी होती तो शिकारसे काम बनता। परन्तु वीरोंकी शिकार नहीं होती है। अुनका विचार समझना होता है। अिसलिअे केवल हिंसासे कम्युनिस्टोंका मुकाबला नहीं हो सकता है। वहांके जमींदारोंको हमने समझाया कि भाअियो, यह सारा तुम्हारे हाथमें है। तुम्हें गरीबोंके साथ रहना है तो अुन्हें क्यों पीसते हो। अुनके साथ प्रेमसे रहो। जमीनवाले तो बेचारे डरे हुअे थे अिसलिअे गांव छोड़कर शहरमें भाग गये थे। हमने अुनको समझाया कि हमारे साथ गांवमें चलो, डरो मत। हम तुम्हारा और गांववालोंका प्रेम बना देंगे। हमने गांववालोंको समझाया कि आपकी अुनके खिलाफ कोअी शिकायत है तो अुनको डराना ठीक नहीं है। अपनी शिकायत पेश कीजिये। अिस तरह हमने किसान, जमींदार, सिपाही और कम्युनिस्टको समझाया। आखिर दो महीनेकी हमारी मुसाफिरीमें हमको वहां पर बारह हजार अेकड़ जमीन मिली। तब लोगोंको कुछ अितमीनान हो गया कि शान्ति और प्रेमसे कुछ काम हो सकता है। अिस तरहसे तेलुगू मुल्कमें अिस कामका आरम्भ हुआ। तो हम चाहते हैं कि यहां पर जो तेलुगू बोलनेवाले लोग बैठे हैं वे अिस आन्दोलनके मर्मको समझ लें और अिस कामको अुठा लें।

हमारी सभाओंमें हजारों भूमिहीन आते हैं और वे हमारा संदेशा सुनते हैं कि भूमिका मालिक तो भगवान् ही हो सकता है, दूसरा कोअी नहीं हो सकता। जैसे हवा, पानी और सूरजकी रोशनी भगवान्की देन है, अुसी तरह जमीन भी भगवान्की देन है। अिसलिअे अुस पर किसीका दावा नहीं हो सकता। अब भूमिहीन लोग भी जाग गये हैं। तो यह असम्भव है कि ये सारे लोग जाग जायं और फिर भी दबे रहें, जैसे कि आज तक थे। और हम चाहते भी नहीं कि वे दबे रहें। हम नहीं चाहते कि हिन्दुस्तानमें कोअी भी दबा रहे या कोअी भी दूसरोंको दबाये। आजादीका अर्थ हम यह करते हैं कि जिस देशमें न कोअी डरता है, न कोअी किसीको डराता है, न कोअी किसीसे दबता है न कोअी किसीको दबाता है, वह देश आजाद है।

www.vinoba.in

स्वराज्यके माने हैं कि हम किसीसे दबें नहीं और किसीको दबायें नहीं। हम अंग्रेजोंसे दबते थे और हरिजनोंको दबाते थे। अिस तरह दोनों प्रकारकी गुलामी थी। बापूने हमें सिखाया कि हमें हरिजनोंको दबाना नहीं चाहिये और अंग्रेजोंसे दबना नहीं चाहिये। अिसी तरह हम नहीं चाहते कि हिन्दुस्तानके आजाद होनेके बाद यहां कोअी भी शख्स दबा रहे। आजादीके बाद हमारा यह धर्म हो जाता है कि हम जमीनका बटवारा करें और भूमिहीनोंको जमीन दें। गांवकी जमीन गांवकी बनायी जाय और भूमिकी मालकियत मिट जाय।

विनोबा

हरिजनसेवक

२३ जुलाओ १९५५

अगली शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा

केन्द्रीय शिक्षा-मंत्रालयने दूसरी पंचवर्षीय योजनामें शामिल करनेके लिअे अेक १०८० करोड़ रुपयेकी कामकी योजना पेश की है। दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी रूपरेखाकी तरह अिसे भी अतिशय महत्त्वाकांक्षी बताया जाता है। आश्चर्यकी बात है कि योजना-कमीशन, हालांकि वह दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी अपनी प्रस्तावित रूपरेखामें वही दोष नहीं देखता, शिक्षाकी अुपर्युक्त योजनामें यह दोष बताता है। वह शिक्षा-मंत्रालय द्वारा पेश की हुअी रूपरेखाको स्वीकार नहीं करता और कहता है कि दूसरी राष्ट्रीय योजनामें शिक्षाके लिअे ५०० करोड़से अधिक रुपये नहीं निर्धारित किये जा सकते। योजना-कमीशन दूसरे विभागोंकी योजनाओंके लिअे कूते गये खर्चमें काटछांट करनेमें तभी सफल हो सकता है, जब वह अपनी योजनाकी रूपरेखामें सुधार करे। बेशक, अिस रूपरेखामें विदेशी मदद और मुश्किलसे प्राप्त होनेवाली आयके बारेमें बड़े बड़े हवाअी किले बना लिये गये हैं। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि अिसमें घाटेके बजट पर आधार रखा गया है, जो वास्तवमें घाटा ही है, सच्चा बजट नहीं।

अूपर जिसकी चर्चा की गअी है वह शिक्षा-योजनाकी रूपरेखाका केवल अेक पहलू है। अुसके बारेमें ज्यादा मौजूं सवाल तो यह है कि दूसरी पंचवर्षीय योजनाके दौरानमें दरअसल किया क्या जायेगा। मेरे पास अिस समय अुसका तफसीलवार कार्यक्रम बतानेवाली मूल योजना तो नहीं है। दैनिक अखबारों परसे मैंने जो कुछ समझा है, अुसीके आधार पर मैं यह लिख रहा हूं।

प्राथमिक शिक्षाके क्षेत्रमें बुनियादी शिक्षा दाखिल करनेकी राष्ट्रीय नीति पर अमल करनेका अधिक प्रयत्न किया जायगा। अुसके साथ और मुख्यतः ज्यादा स्कूल खोलनेका प्रयत्न किया जायगा, ताकि १९६१ तक ६ से ११ वर्षकी अुम्रके लगभग ७५ प्रतिशत बालकोंको और ११ से १४ की अुम्रवाले लगभग ३० प्रतिशत बालकोंको स्कूलोंमें शिक्षा देनेकी व्यवस्था की जा सके।

माध्यमिक शिक्षाके क्षेत्रमें अमुक संख्यामें विविध हेतुओंवाले (मल्टी-परपज़) हाअीस्कूल खोले जायंगे।

अुच्च शिक्षाके क्षेत्रमें सुझाया गया है कि युनिवर्सिटियां आजकी तरह चार वर्षके बदले ३ वर्षका प्रथम डिग्री कोर्स रखें।

और शिक्षाकी सारी अवस्थाओंमें शिक्षकों और अध्यापकोंका वेतन बढ़ानेके लिअे अेकसा प्रयत्न किया जायगा। मेरे खयालसे यह अतिरिक्त खर्चकी अेक बड़ी मद होगी, जिसका स्वागत किया जायगा। लेकिन देशके शिक्षा-मंत्रालयोंको राष्ट्रको यह विश्वास दिलाना होगा कि शिक्षण-कार्य वास्तवमें प्रेम और प्रामाणिकतासे किया जायगा, आज जिस यांत्रिक ढंगसे शिक्षा-कार्यका संचालन किया जाता है अुसमें जड़मूलसे परिवर्तन कर दिया जायगा और अंग्रेजी शिक्षाकी पुरानी पद्धतिके कारण, जो हमारी नापसन्दगी और अुसे बदलनेकी अिच्छाके बावजूद अभी तक जारी है, आज शिक्षाके क्षेत्रमें जो अनुशासनहीन व्यापारिक वृत्ति घुस गअी है अुस पर नियंत्रण रखा जायगा। यह अेक अत्यन्त महत्त्वका सुधार है, जो हमारी सम्पूर्ण शिक्षा-पद्धतिमें किया जाना जरूरी है। शिक्षाकी किसी भी सच्ची योजनामें अिस सुधारको प्रथम स्थान दिया जाना चाहिये। जब तक हम अिस पर ध्यान नहीं देंगे, शिक्षाके विस्तारको बढ़ानेवाली हमारी योजनायें केवल असफल ही रहेंगी; अुनसे यह समस्या पेचीदा बनेगी और आजकी अन्धाधुन्धीकी हालतोंमें और ज्यादा अव्यवस्था और गड़बड़ी पैदा होगी। बेशक, मेरा मतलब शिक्षाके विस्तारकी निन्दा करना या अुसकी आवश्यकतासे अिन्कार करना नहीं है। मेरा कहना अितना ही है कि हमारी शिक्षाके बुनियादी सुधार या अुसके गुणमें परिवर्तन करनेकी महत्त्वपूर्ण आवश्यकताके प्रश्नको अुसे अुलझाना नहीं चाहिये।

शिक्षाके विस्तार और सुधारके प्रश्न पर आते हुअे यह कहना जरूरी हो जाता है कि रूपरेखामें बहुतसी बातोंको अेकसाथ हाथमें लेनेका कार्यक्रम पेश किया गया है। शिक्षा-मंत्रालयने जो कार्यक्रम पेश किया है, अुसमें योजना-शक्ति और शैक्षणिक दीर्घदृष्टिका अभाव दिखाअी देता है।

अुदाहरणके लिअे, तीन सालके डिग्री कोर्सका सुधार अुसके पहले स्कूलोंमें चलनेवाले १० या ११ सालके संशोधित शिक्षणकी आखिरी मंजिल माना जा सकता है। स्कूलोंके शिक्षणमें भी अभ्यासक्रम और संगठनकी दृष्टिसे सुधार होना चाहिये। कमसे कम कहा जाय तो ग्रान्टका प्रलोभन देकर युनिवर्सिटियोंको अैसा सुधार करनेके लिअे तैयार करना व्यर्थ होगा, जिसे करनेकी अुनकी अिच्छा नहीं दिखाअी देती। अिससे बिना कारण अुनकी व्यवस्थामें गड़बड़ी पैदा होगी और बदलेमें तुरन्त कोअी लाभ नहीं होगा। क्योंकि केवल ४ सालके बदले ३ साल कर देनेसे पढ़ाअीके समयमें ही परिवर्तन होगा; वस्तुतः गुणकी दृष्टिसे कोअी ठोस लाभ नहीं होगा। स्कूलकी ११ सालकी शिक्षामें ठोस सुधार करनेके बाद अेक वर्षकी बचतवाला यह सुधार किया जा सकता है। स्कूलकी शिक्षामें सुधार हो जाने पर युनिवर्सिटीकी शिक्षामें स्वभावतः यह सुधार हो जायगा और वह अुचित भी माना जायगा। आज यह सुधार करनेका मतलब होगा पुराने कमीशनोंकी सिफारिश पर बिना सोचे-समझे अमल करना, जिन्होंने अपने मुख्य विचार ब्रिटिश नमूनोंसे लिये थे। आज अुनके अिन विचारोंकी कोअी अुपयोगिता नहीं है। हमें अपने अनुकूल शिक्षा-पद्धतिका निर्माण करना होगा, जो देशके सारे लोगोंके — जिन्हें हम स्कूलों और युनिवर्सिटियोंमें शिक्षा देना चाहते हैं — हितों और जरूरतोंको पूरा कर सके। ब्रिटिश शासनकालमें केवल देशके कुछ वर्गोंकी सीमित जरूरतोंका ही खयाल रखा गया, जिनकी संख्या देशकी समस्त प्रजाके १० प्रतिशतसे भी कम थी। अिसलिअे यदि शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा पहले किये जाने लायक कामों पर पहले ध्यान दे और तीन सालके डिग्री कोर्स जैसे सुधारोंको आगेके लिअे मुलतवी कर दे तो ज्यादा अच्छा होगा।

बेशक, सबसे पहला करने जैसा काम संविधानके अुस आदेशमें बताया गया है, जिसमें कहा गया है कि १९६० तक सब बच्चोंके लिअे १४ सालकी अुम्र पूरी करने तक मुफ्त और अनिवार्य शिक्षाकी व्यवस्था की जाय। शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा कबूल करती है कि १९६० तक अैसा करना असंभव है। और अगर योजना-कमीशन १०८० करोड़के अुसके कार्यक्रममें काटछांट कर देता है तब

www.vinoba.in

तो वह काम और भी असंभव हो जायगा। तब क्या किया जाय? यह समस्या अुतनी ही भारी और विकट है, जितनी कि आर्थिक क्षेत्रमें हमारी बेकारी और अर्ध-बेकारीकी भयंकर समस्या है। संघ-सरकारकी दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी रूपरेखा बेकारीके विषयमें अुसी तरह अपनी हार कबूल करती है, जिस तरह शिक्षा-मंत्रालय सार्वत्रिक राष्ट्रीय शिक्षाके बारेमें अपनी हार कबूल करता है।

यहीं हमारे राष्ट्रपिता बुद्धिमानी और दूरदर्शितामें केवल शैक्षणिक या आर्थिक क्षेत्रके सरकारी अथवा गैर-सरकारी निष्णातोंसे बहुत आगे बढ़ गये थे। अुन्होंने बताया कि बुनियादी शिक्षा अर्थात् हाथ-अुद्योगों द्वारा दी जानेवाली शिक्षा ही अन्तमें आर्थिक दृष्टिसे लाभदायक सिद्ध हो सकती है, क्योंकि वह लोगोंकी जरूरतकी चीजें भी तैयार करेगी। अिसी विचारके दूसरे अंगके रूपमें अुन्होंने कहा कि अिन अुद्योगोंको हमारे बेकार लोगोंको पूरा कामधंधा देना चाहिये और अिस तरह बुनियादी शिक्षाके नये विचारके बढ़ने और पनपनेके लिअे आवश्यक सामाजिक भूमिका और वातावरणको निश्चित बनाना चाहिये।

यह खुशीकी बात है कि हम गांधीजीके अिस संपूर्ण प्रस्तावके आर्थिक या औद्योगिक भागको मानने लगे हैं, लेकिन शिक्षा-संबंधी अुनके सुधारको अभी हमने अुतना स्वीकार नहीं किया है। कहनेका मतलब यह है कि संघ-सरकारकी दूसरी पंचवर्षीय योजनाकी रूपरेखाने, कितनी भी अनिच्छासे क्यों न हो, छोटे पैमानेके अुद्योगोंको योजनाका अभिन्न अंग मान लिया है, जब कि शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा कितना ही चाहने पर भी अुस हद तक अैसा नहीं कर सकती। क्योंकि हमारी शिक्षित दुनियाके अूपरी स्तरके लोग अिस सुधारको आज भी सन्देहकी दृष्टिसे देखते हैं और हमारी संपूर्ण शिक्षाके नवनिर्माण और पुनर्गठनके प्रश्न पर गहराअीसे विचार नहीं करते।

हमें अिस बातका ध्यान रखना चाहिये कि शिक्षा अब अेक छोटेसे वर्गकी प्रवृत्ति नहीं रह सकती। संविधानमें देशके प्रत्येक नागरिकका काम, शिक्षा और बेकारीमें सरकारी सहायता वगैरा पानेका अधिकार स्वीकार किया गया है। शिक्षा-संबंधी अधिकार अूंचेसे अूंचे दर्जेकी पूर्ण शिक्षा प्राप्त करनेका अधिकार है, अिसलिअे जो भी योग्य हो अुसे आर्थिक स्थिति, लिंग, वर्ग या धर्मके किसी भेदभावके बिना पूर्ण शिक्षा मिलनी चाहिये। यह अधिकार 'डोल' और आर्थिक सहायता द्वारा नहीं दिया जा सकता। वह अुस सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक व्यवस्थाका स्वाभाविक परिणाम होना चाहिये, जो अब हम कायम करेंगे। अिसी सन्दर्भमें बुनियादी शिक्षा तथा ग्रामोद्योग और गृह-अुद्योग अेक अखण्ड कार्यक्रम बनाते हैं और हमारे लिअे अनिवार्य बन जाते हैं, अगर हम सचमुच देशमें अेक स्वस्थ, स्वावलंबी और समृद्ध नअी व्यवस्था निर्माण करना चाहते हैं। शिक्षा-मंत्रालयको अिस सिद्धान्त पर और अिस विशाल दृष्टिसे अपने कामकी योजना बनानी चाहिये। यह आवश्यक पैसेकी अुसकी मांगको निर्विवाद और अनिवार्य बना देगा। जो लोग काम और शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, अुन्हें स्वस्थ और सुव्यवस्थित राज्यमें अिनसे अिन्कार नहीं किया जा सकता। अैसे लोगोंको दोनों चीजोंका विश्वास दिलानेके लिअे भारत-सरकारको दूसरी पंचवर्षीय योजनाके साथ राष्ट्रीय पुनर्निर्माणके लिअे बताये हुअे गांधीजीके अुस कार्यक्रमका मूल्य भी समझना चाहिये, जो अुन्होंने शिक्षा और ग्रामोद्योगोंके संबंधमें बताया है।

१३-७-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

सेवा और भक्ति

[ता० १६-५-'५५ को पुडामारी पड़ाव (अुत्कल) में दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

बहुत दफा यह पाया जाता है कि हिन्दुस्तानका भक्तिमार्ग सेवापरायण नहीं है। आज तक वह मूर्ति, ध्यान-परायण रहा है। लेकिन अब जमाना आया है कि भक्तिमार्गको अपना मुख्य स्वरूप ही सेवापरायणताका बनाना चाहिये। अेक जमाना था जब अैसी योजना की गयी थी कि गांवमें कोअी मध्यवर्ती मंदिर हो और अुस मंदिरकी सेवा अिस तरहसे चले कि गांवके सामने सेवाका आदर्श अुपस्थित हो। वह तो अेक किंडर गार्टनका स्कूल खोला गया था। जैसे मंदिरमें सुबह भगवान्‌के जागनेका समय हुआ तो चौघड़ा बजता था और गांववालोंसे कहा जाता था कि हे भगवानो जागो। तो क्या पत्थरका भगवान् सोता है या जागता है? लेकिन सुबह सब लोगोंको जगानेके वास्ते यह अेक नाटक किया जाता था। फिर दोपहरको भगवानको प्रसाद चढ़ानेका समय आता था, तब आरती होती थी तो सारे गांववाले वहां पर आकर दर्शन करते थे और फिर घर जाकर भोजन करते थे। तो गांवके लोगोंके भोजनका अेक निश्चित समय होता था। फिर शामको भगवानकी आरतीका समय होता था, तो गांववाले अपना सारा काम बन्द करके मंदिरमें जाते थे और आरतीके समय सारे भाअी अिकट्ठा होते थे। फिर शामको भगवान्‌के सोनेका समय होता था तो अुनको सुलानेके लिअे गीत गाय जाते थे। सारे लोग अुसमें सम्मिलित होते थे और भगवान्‌का नाम लेकर घर जाकर सोते थे। तो सोनेका भी अेक निश्चित समय होता था। अिस तरह सारे गांवकी जो दिनचर्या होनी चाहिये अुसका नियमन मंदिरकी दिनचर्यासे होता था। अिस तरह मंदिरके जरिये लोगोंको शिक्षा मिलती थी।

लेकिन आज तो यह होता है कि मंदिरमें भगवान्‌के नैवेद्यका समय हुआ तो भी जिस मनुष्यके घरमें खानेकी चीज ही नहीं है, वह भगवान्‌को क्या खिलायेगा? जब देशकी यह हालत हो कि देशके लोग भूखे, नंगे और रोगसे पीड़ित हों तब अुनकी सेवामें लग जाना ही भक्तिमार्गका सर्वोत्तम कार्यक्रम है। मुझे खुशी हो रही है कि वैष्णव संप्रदायके अेक सेवकने यह महसूस किया कि भूदान-यज्ञके कामके जरिये भक्तिमार्गका प्रसार ठीक तरहसे हो रहा है। हम लोगोंको बार-बार यही समझाते हैं कि हमारे आसपास जितने प्राणी हैं, वे सब हमारे स्वामी हैं और हम अुनकी सेवाके लिअे जन्मे हैं। यह स्वामी-सेवक भाव भक्तिमार्गकी आत्मा है। जहां हम भूतमात्रको हरिस्वरूप देखते हैं, अुनको स्वामी समझते हैं और अपनेको सेवक, वहां हमारी हरअेक कृति भक्तिमार्गकी बन जाती है। अिसलिअे भक्तोंको बहुत नम्र होना चाहिये। अुनमें आपस-आपसमें अत्यन्त प्रेम होना चाहिये, और अुनको यह महसूस होना चाहिये कि हम भगवान्‌की सेवामें लगे हैं। अिसलिअे किसी भी प्रकारके राग-द्वेषको मनमें स्थान नहीं देना चाहिये। लोग हमारे जीवनकी कसौटी भक्तोंके जीवनसे करेंगे और देखेंगे कि यह जो भूदानमें लगे हुअे कार्यकर्ता हैं, अुन्होंने अुसके अनुसार अपना जीवन और हृदय बनाया है या नहीं। अिसलिअे हमें तनिक भी संदेह नहीं है कि अगर हम अपने जीवनमें जागृति रखेंगे तो भूदानका काम अग्निके जैसा फैलेगा।

विनोबा

सर्वोदयका सिद्धान्त

कीमत ०-१०-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

www.vinoba.in

कागजी मुद्रा और बैन्कोंकी माया

श्री शंकराचार्यने मायाकी व्याख्या करते हुअे अुसे अैसे तज्ञकी अुपमा दी है जो बेमेल वस्तुओंको आपसमें मिला देता है। बैन्कोंके सहयोगसे कागजी मुद्राने यही चमत्कार कर दिखाया है। जिस चीजकी अुम्र ज्यादासे ज्यादा दो सालकी या लगभग अितनी ही हुआ करती थी, अुसे अिन दोनोंने मिलकर अमर कर दिया है। अुन्होंने मनुष्यमें परिग्रहकी वृत्तिको तीव्र करके पूंजीवादके राक्षसको जन्म दिया है, जो विपुल मात्रामें अुत्पादन करनेकी क्षमता तो रखता है, पर संपत्तिका अत्यंत विषम वितरण करता है।

लगभग दो सौ साल पूर्व तक बड़े-बड़े भू-स्वामियोंकी संपत्ति अनाज, कपास या खेतीकी दूसरी वस्तुओं और पशुओंके रूपमें हुआ करती थी। अनाज बहुत हुआ तो दो साल तक टिकता था और पशु १० से १५ साल तक। और वे खतम हों अुसके पहले ही अुसे अुनका अुपभोग या अुपयोग कर लेना पड़ता था। मान लीजिये कि अुसकी वार्षिक आय १०० गाड़ी धान थी। अिसमें से अुसका परिवार अपने भोजनके रूपमें १० गाड़ी चावल खर्च करता और करीब १० गाड़ी सरकारी करके रूपमें चला जाता था। बाकीका वह क्या करता था? यह अधिक अनाज घरके नौकर, माली, खेतिहर मजदूर, बुनकर, धोबी, नाअी, कुम्हार, बढ़अी आदिको अुनकी सेवाओंके बदलेमें दिया जाता था। और अेक अंश कलाकारोंको आश्रय देनेमें खर्च होता। बाकी जितना बचता वह स्थानीय सार्वजनिक कार्योंमें दानकी तरह दिया जाता; अुदाहरणके लिअे मंदिर, तालाब आदि बनवाने और अिसी तरहके दूसरे कामोंमें खर्च होता जो सबके काममें आते थे। यदि वह अैसा नहीं करता तो सारा अनाज पड़ा-पड़ा बेकाम हो जाता था।

अिस तरह वस्तुतः वह अपनी संपत्तिका ट्रस्टी होता था, क्योंकि अुसकी आयका लगभग ८० प्रतिशत विविध प्रकारकी सेवाओंके लिअे गांवमें ही बंट जाता था। संपत्तिका संग्रह करना अुसके लिअे आसान नहीं था। अुस समय चांदी और सोनेके सिक्के ही मुद्रा थे और अुनकी संख्या और मात्रा अेक सीमाके बाहर नहीं जा सकती थी।

लेकिन कागजी मुद्रा और व्यापारियोंकी सहायताके लिअे बैन्कोंके आगमनके साथ ही आर्थिक जीवनमें अेक बड़ा परिवर्तन अुपस्थित हुआ। अब जमींदारके लिअे अपना ८० गाड़ी अतिरिक्त अनाज बेचना और जितनी बन सके अुतनी रकम बैन्कमें लगाना संभव हो गया। अभी तक अुसके पास सीमित जमीन थी जिससे सीमित वार्षिक आय हुआ करती थी। अब जमीनके साथ अुसके पास प्रतिवर्ष वह अपनी चतुराअीके जरिये जितना पैसा बचा सके अुतना पैसा भी रहने लगा। अभी तक संपत्तिके नाम पर अुसके पास कुछ अतिरिक्त अनाज हुआ करता था, जिसे अुसे सालमें खर्च कर डालना पड़ता था। लेकिन अब वह अपनी अिस संपत्तिको बैन्कमें जमा की गयी बढ़नेवाली पूंजीका रूप देनेमें समर्थ हो गया। पहले अुसके अुत्तराधिकारियोंको अुसकी जमीन ही मिलती थी। अब यह बैन्ककी पूंजी भी मिलने लगी। बैन्कके आगमनके पहले तक अिस बातकी कोअी कल्पना भी नहीं कर सकता था।

बैन्ककी पूंजीके रूपमें मनुष्यकी संग्रहवृत्ति या लोभको अेक अच्छा बलवान् साथी प्राप्त हो गया। अब चूंकि लोभके अिशारे पर काम करना संभव हो गया, अिसलिअे जमींदार अपना भरसक अतिरिक्त अनाज व्यापारीको बेचने लगा जिसे बैन्ककी बड़ी पूंजीका बल था। अनाजका अेक बड़ा अंश गांवके बाहर भी जाने लगा और गरीब देहातियोंके लिअे वह अप्राप्य हो गया। सार्वजनिक अुपयोगके कार्योंकी, जैसे तालाब, मन्दिर आदि बनवानेकी प्रेरणा पहलेसे बहुत कम हो गयी। गांवोंमें आधुनिक समयमें बनाये गये सार्वजनिक कुअें, तालाब, मन्दिर आदि देखनेमें नहीं आते।

अपनी संपत्ति अिस तरहके कार्योंमें लगानेके बजाय अब अुन्होंने अुसे पश्चिमकी नयी आकर्षक वस्तुअें खरीदनेमें लगाना शुरू कर दिया। अब वे अमेरिकाकी मोटरें, स्विट्ज़रलैंडकी हाथ-घड़ियां, अिंग्लैंडका फैशनेबल कपड़ा और फ्रांस तथा जापानकी शौककी चीजें खरीदनेमें पैसा लगाने लगे। गांवके कारीगरोंकी अुपेक्षा होने लगी और अुन्हें अपने भाग्य पर छोड़ दिया गया। गरीब लोगोंकी गरीबी और संख्या भी बढ़ने लगी।

पूरा विश्लेषण करने पर मालूम होगा कि अगर पूंजीवादको कागजी मुद्रा और बैन्कोंकी जोरदार मदद न मिली होती, तो वह न तो अुत्पन्न हो सकता था और न पनप सकता था। निष्कर्ष यह है कि समाजवाद तब तक नहीं स्थापित किया जा सकता, जब तक कि पूंजीवादकी अिस जड़ पर कुठाराघात नहीं किया जाता। कागजी मुद्रा और बैन्ककी पूंजी दोनोंके जीवनकी मियाद अभी अपरिमित है; अैसा नहीं होना चाहिये। जमींदारों या अुद्योगपतियोंके पास जो कागजी मुद्रा है, वह असलमें अनाज या कपड़ा आदि वस्तुओंकी प्रतीक है और अिन वस्तुओंका जीवन बहुत छोटा होता है। अिसलिअे यह बिलकुल अुचित होगा कि कागजी मुद्राका जीवन भी दो-तीन वर्षका ही हो। अेक साल तक तो अुसकी कीमत कायम रहे, पर बादमें अुसे घटते जाना चाहिये और अुक्त मुद्दतके बाद वह खतम हो जानी चाहिये। जमीन या खान आदि हर साल अुपज देती हैं; कुदरतन् अुनकी अुम्र बड़ी होती है। लेकिन, जैसा कि सुविदित है, अिमारतों, फैक्टरियों, यंत्रों आदिकी आयु अपेक्षया छोटी होती है, क्योंकि अुनकी अुपयोगिता और अिसलिअे मूल्य हर साल कम होता जाता है। अिस तथ्यको अुद्योगपति और पूंजी लगानेवाले व्यापारी मानते हैं। तो फिर क्या बात है कि केवल कागजी मुद्राको — जो कि अनाज, कपड़ा आदि अल्पजीवी वस्तुओंका ही प्रतिनिधित्व करती है — यह नियम न लगाया जाय? अुसकी कीमत भी अेक निश्चित मुद्दतके बाद घटने लगना चाहिये।

मेरा प्रस्ताव है कि नोटोंकी कीमत अेक साल या डेढ़ साल तक तो पूरी कायम रहनी चाहिये, पर बादमें वह प्रति मास दसवां हिस्सा कम होती जानी चाहिये और अिस तरह क्रमशः शून्य हो जानी चाहिये। अनाजकी कीमतोंमें क्या अैसा ही नहीं होता? यही बात बैन्कमें जमा पूंजीको भी लागू होनी चाहिये। अेक निश्चित मुद्दतके बाद अुसकी कीमत कम होती जानी चाहिये।

मुद्रा और बैन्क अुपयोगी वस्तुअें हैं, किन्तु अुनकी बुराअियोंका संशोधन होना चाहिये। अगर मुद्राको भी अनाजकी तरह अल्पजीवी बना दिया जाय तो संग्रहकी बुराअी खतम हो जाय। और विषम बंटवारेके दोष भी अपने-आप बहुत कम हो जायं।

बुढ़ापेमें अपनी और मृत्युके बाद अपने बच्चोंकी अरक्षितताका विचार भी संग्रहकी वृत्तिका अेक बड़ा प्रेरक कारण है, किन्तु अुसका विचार अलग करना पड़ेगा।

स्वामी आत्मानन्द

[आधुनिक व्यापार और पूंजी-नियोजनमें पैसा केवल विनिमयका साधन नहीं है, वह पूंजी भी है। पूंजीके रूपमें अुसका व्यवहार समाजके लिअे अलग प्रकारका है। अूपर लेखकने जो कुछ कहा है, वह पैसेके अिस दूसरे अुपयोगके बारेमें है। अगर हम भारतके देहातोंमें विकेन्द्रित अुद्योगोंका निर्माण करना चाहते हैं, तो हमें अिस बात पर गंभीर विचार करना चाहिये।

१६-३-'५५ — म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

आणविक शस्त्रास्त्र और मानव-सुख

अगर भारत अमरीकी मदद स्वीकार करता है तो आणविक शस्त्रास्त्रोंके निर्माण और विस्फोटके अुसके विरोधमें कोअी नैतिक वल नहीं रह जाता। अगर हमारे विरोधमें नैतिक बल है, तो अुसका अर्थ यह होना चाहिये कि हमने अमेरिकाकी सहायता लेना छोड़ दिया है। जव तक अिन जघन्य विस्फोटों और अमरीकी आर्थिक मददको अेक-दूसरेके समकक्ष माना जाता है, तब तक तो अिसके सिवा और कोअी रास्ता नहीं है।

गुनाहको रोकनेवाली चीज बलका वास्तविक प्रयोग नहीं, वल्कि बलके प्रयोगकी धमकी है। अिसलिअे दोनों विरोधी पार्टियोंके पास आणविक शस्त्रास्त्रोंका होना अिस बातकी गारंटी नहीं है कि बातचीत और युक्तियां असफल हो जायं तो भी शान्ति कायम रहेगी। जनतंत्र राष्ट्रको यह बात समझ लेनी चाहिये। अगर तर्क और युक्तियां और अेक-दूसरेसे मेल साधनेका प्रयत्न जनतंत्रकी बुनियाद है तो शस्त्रास्त्र अुसके दुश्मन हैं। आणविक शस्त्रास्त्रोंको तो अुसके लिअे और भी ज्यादा विघातक मानना चाहिये। अिन शस्त्रास्त्रोंके दोनों पक्षोंके पास होनेके कारण अेक बाहरी संदिग्ध शान्ति शायद रहे, लेकिन सच्ची शान्तिके निर्माणमें अुनसे कोअी सहायता नहीं मिल सकती। दूसरी ओर पंचशीलमें अ-हस्तक्षेप और सह-अस्तित्वके जिन सिद्धान्तोंका समावेश हुआ है, वे शांतिकी रचनामें महत्त्वपूर्ण योगदान करते हैं। अिससे स्पष्ट हो जाता है कि जरूरत हृदयोंके परिवर्तनकी है, युक्ति-प्रयुक्तियों या शस्त्रास्त्रोंके परिवर्तनकी नहीं।

जापानने सन् १९४५ में अणुवमोंके भयानक संहारका कष्ट भोगा और अब वह प्रायोगिक विस्फोटोंके दुष्परिणाम भुगत रहा है। तामिलमें अेक कहावत है कि वर्षा तो बन्द हो गयी, लेकिन बूंदा-बांदी जारी रही। दोनोंसे मौसम बेमजा होता है। जापानियोंने अिस बातका विरोध किया है, लेकिन अुसका परिणाम कुछ नहीं निकला, यद्यपि अमेरिका जापानकी समृद्धिमें दिलचस्पी रखता मालूम होता है। मतलब यह हुआ कि लोग मरें, अुनके हाथ-पांव टूटें और वे अपाहिज हो जायं, अिस बातकी तब तक कोअी चिन्ता नहीं, जब तक कि नये नये बांध, पुल और सड़कें बनायी जा रही हैं, नयी फैक्टरियां खड़ी की जा रही हैं और अुन्हें नया काम-धंधा तथा अन्न दिया जा रहा है। प्रश्न यह है कि अगर लोग अपाहिज हो जाते हैं, तो अिन सारी सुविधाओंको भोगेगा कौन? आणविक शस्त्रास्त्र और आर्थिक मदद दोनों अेक-दूसरेके सर्वथा विरुद्ध मालूम होते हैं। अगर अिन शस्त्रास्त्रोंके कारण मानव-जातिके संपूर्ण विनाशका भविष्य नजर आ रहा है तो फिर अिस बातका क्या मतलब रह गया कि खेतमें अन्नके दो दाने कम हों या हजार ज्यादा हों। यह स्थिति हमें अुस मनुष्यकी याद दिलाती है जिसने अपने पड़ोसीके घरमें पहले तो आग लगा दी और फिर अुसे बुझानेके लिअे अुस पर पानी भी डाला। जो लोग अुस हाथसे विदेशी मदद लेनेकी हिमायत करते हैं, जो मौका आने पर संहारके लिअे अुद्यत रहता है, अुनकी तुलना हम शराबबन्दीके विरोधियोंसे कर सकते हैं। शराबबन्दीके विरोधी कहते हैं कि सरकार शराबबन्दी करके अपनेको लाखों रुपयोंकी आयसे वंचित कर रही है, जब कि अुन रुपयोंका राष्ट्रके कल्याणकी योजनाओंमें सदुपयोग किया जा सकता है। वे यह भूल जाते हैं कि शराबबन्दी खुद अेक कल्याणकारी योजना है। विदेशी मदद लेकर या अुसके बिना ही जितने वर्ष लग जायं अुतने वर्षोंमें विकास करना कम खर्चीला पड़ेगा, बजाय अिसके कि हमें आणविक शस्त्रास्त्रोंके घातक परिणाम भुगतने पड़ें।

(अंग्रेजीसे)

आर० संतानम्

अम्बर-योजना व कार्य

अप्रैल १९५४ में अखिल भारतीय खादी और ग्रामोद्योग मंडलकी तरफसे बड़े पैमाने पर अेक प्रदर्शनका आयोजन किया गया था, जिसमें अम्बर चरखेका प्रात्यक्षिक प्रदर्शन रखा गया था। अुस समय सर्व-सेवा-संघकी तरफसे जो प्रयोग चल रहा था, अुस परसे अैसा दीखता था कि अम्बर चरखेके पूरे सेटके दाम रु० २००–२५० होंगे; शहरमें बड़े कारखानोंमें अुसके अुत्पादनका आयोजन करना होगा; और अुसका अुपयोग ग्राम-स्वावलम्बनकी दृष्टिसे किया जा सकेगा। किसी अेक ग्राममें ५–१० अम्बर सेट परिश्रमालयके द्वारा चलाये जायेंगे और कपड़ेके लिअे आवश्यक सूत गांवमें तैयार होगा।

१९५४ के अप्रैलके बाद १९५५ जून तक अंबर चरखेमें काफी सुधार होते रहे, अुसके दाम घटानेकी दृष्टिसे कोशिश चलती रही और दूसरी तरफ किसी शहरके बड़े कारखानेमें अंबर सेट बननेके बदले अुसके अुत्पादनका बहुत सारा हिस्सा गांवके बढ़अियोंसे या लुहार आदि कारीगरोंसे गांवमें ही बने, अिस दिशामें कोशिश होती रही। नतीजा यह आया कि आज अंबर सेटके दाम रु० २५० से ७०–७५ रुपये तक आ गये हैं। कुछ विशेष पुर्जे छोड़कर अंबर सेट आज गांवका बढ़अी बना सकता है। अंबर सेट बनानेका ५०–६० प्रतिशत काम गांवके कारीगर ही कर सकते हैं।

अिस तरह दाम घट जाने तथा चरखा सादा बन जानेके कारण घरेलू अुद्योगकी दृष्टिसे अंबर सेटका आयोजन हर परिवारमें करना संभव दीख रहा है। सर्व-सेवा-संघ ग्राम-स्वावलम्बनके बदले घरेलू स्वावलंबनकी दृष्टिसे अिसके प्रयोग कर रहा है।

२८ नवम्बर १९५४ को सेवाग्राममें सर्व-सेवा-संघकी सभामें नीचे लिखे अनुसार प्रस्ताव पास किया गया और अम्बर चरखेका प्रयोग व्यापक क्षेत्रमें और बड़े पैमाने पर करनेका आयोजन सर्व-सेवा-संघकी तरफसे करनेका तय हुआ। अुसके अनुसार अेक योजना बनाअी गअी। योजनाको सर्व-सेवा-संघकी जगन्नाथपुरीकी मार्च ३०, १९५५ की सभामें स्वीकृति दी गयी। संक्षेपमें वह योजना नीचे लिखे अनुसार है:—

(१) योजना काल ता० १–५–'५५ से ३०–४–'५६ तकका रहे।

(२) ८,८०० अम्बर सेट सर्व-सेवा-संघकी तरफसे बनाये जायं और देश भरमें करीब अेक सौ केंद्र वस्त्र-स्वावलंबनकी दृष्टिसे चलाकर अम्बर चरखेकी कार्यक्षमता जांची जाय; केंद्र अलग अलग प्रांतमें खोले जायं, अलग अलग किस्मका कपास अिस्तेमाल करनेकी दृष्टि भी रखी जाय और आदिवासियोंसे लेकर बड़े शहरों तक समाजके अलग अलग स्तरमें अुसे चलानेका आयोजन अुन केंद्रोंके द्वारा हो।

(३) अंबर सेट क्षेत्र-स्वावलंबनकी दृष्टिसे ही चलाये जायं। बाजारमें खादी बिक्रीके लिअे कपड़ा फिलहाल न बनाया जाय।

अिस योजनाको सफल बनानेकी दृष्टिसे गत ४–६ महीनेमें नीचे लिखे अनुसार काम हुआ है:

(१) अंबर चरखेके यदि १०० केंद्र देश भरमें चलाने हों तो २५० कार्यकर्ताओंकी आवश्यकता होगी। अुस दृष्टिसे ६० कार्यकर्ताओंका अेक शिक्षण-वर्ग १६ फरवरी, १९५५ को मगनवाड़ीमें शुरू हुआ और अुनका अभ्यास वर्ग तीन महीनेमें पूरा हो गया। अब वे अलग-अलग क्षेत्रोंमें अंबर-केंद्र चलाने व अधिक अनुभव पानेके लिअे भेजे गये हैं।

www.vinoba.in

(२) हम आशा रखते हैं कि दिसंबर-जनवरीके पहले २५० कार्यकर्ताओंकी शिक्षण-व्यवस्था अिस तरह हो जायगी और अुतने आवश्यक कार्यकर्ता अिस कामके लिअे मिल जायेंगे।

हर महीने १,००० सेट बनाये जा सकें, अिसके लिअे लोहेके पुर्जे अिकट्ठा करनेका काम और सीज़न्ड लकड़ी जुटानेका काम भी धीरे-धीरे बड़े पैमाने पर करनेका सोचा जा रहा है।

फरवरी १९५५ में मगनवाड़ीके अभ्यास-वर्गमें जो ६० विद्यार्थी शिक्षा पाकर तैयार हुअे और संघके कुछ कार्यकर्ता अुस प्रयोगमें पहले ही लगे थे, अुन सबके द्वारा संघके पुराने प्रयोग-केंद्र व नये केंद्र मिलाकर नीचे लिखी जगहों पर अम्बर-केंद्र अब तक शुरू हो चुके हैं:

केन्द्र स्थान	जिला	प्रांत	अंबर-सेट देनेकी तारीख	अंबर-सेटकी संख्या
१. मंगरौठ	अुन्नाव	अुत्तर-प्रदेश	२०-४-'५५	२५ सेट
२. रामचंद्रपुर	कटक	अुड़ीसा	१-४-'५५	११ "
३. कौआकोल	गया	बिहार	३-५-'५५	५ "
४. काठमांडू	काठमांडू	नेपाल	७-५-'५५	३ "
५. चक-अिस्लामपुर	मुर्शिदाबाद	बंगाल	२८-५-'५५	४ "
६. बारडोली	सूरत	गुजरात	९-३-'५५	१ "
७. खादीग्राम	मुंगेर	बिहार	२६-५-'५५	५ "
८. कुष्ठधाम, दत्तपुर	वर्धा	मध्य-प्रदेश	१५-५-'५५	१ "
९. त्र्यंबक-विद्यामंदिर	नासिक	बंबअी	१०-५-'५५	३१ "
१०. हुबली	धारवाड़	बंबअी	८-५-'५५	१ "
११. मूल	चांदा	मध्य-प्रदेश	२०-५-'५५	३ "
१२. मगनवाड़ी	वर्धा	"	१५-२-'५५	६५ "
१३. कमेरपुर	मुरादाबाद	अुत्तर-प्रदेश	९-५-'५५	५ "
१४. सेवाग्राम	वर्धा	मध्य-प्रदेश	२-६-'५५	१ "
१५. बिलीमोरा	सूरत	गुजरात		१२ "
१६. पोचमपल्ली	नलगोंडा	हैदराबाद	२४-६-'५५	५ "
१७. गोपुरी	कोल्हापुर	बंबअी	१-७-'५५	२ "
				१८० सेट

कुल १८० चरखे अिन केंद्रोंमें चल रहे हैं।

यह काम अन्यान्य केंद्रोंमें चले, और अंबर-सेटका अुत्पादन भी अुसी क्षेत्रमें हो, अिस दृष्टिसे देशके विभिन्न स्थानोंसे दो-ढाअी सौ बढ़अी-मिस्त्री आदि बुलाकर अुन्हें अंबर-सेट बनानेकी जानकारी करा देनेकी योजना बनायी गयी है।

दिसम्बरके अंत तक करीब ४०–५० केंद्र शुरू हो जायंगे और ३,००० से ४,००० अंबर-सेट अुन केंद्रोंके द्वारा चलाये जायंगे।

योजनाकी मर्यादायें

अंबर चरखेका पूरा मॉडल आज तक १५-१६ बार बदल चुका है। मौजूदा मॉडलमें बिलकुल पहले बने मॉडलकी पहचान तक भी नहीं है। और आजका मॉडल भी नजदीकके भविष्यमें बदलनेकी संभावना है। अिस परिस्थितिमें सर्व-सेवा-संघने यह मर्यादा बांध ली कि मार्च १९५६ तक सर्व-सेवा-संघकी तरफसे बेचनेकी दृष्टिसे अंबर चरखे न बनाये जायं, तथा दूसरे सरंजाम कार्यालय भी बेचनेके खयालसे अंबर चरखा बनानेका काम फिलहाल हाथमें न लें।

देश भरमें आज अंबर चरखेकी कार्यक्षमता और अुपयोगिताके बारेमें आशादायक परिस्थिति खड़ी हो गयी है। संस्थाओं तथा व्यक्तियोंकी तरफसे कीमत देकर अंबर सेट खरीदनेकी मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। अुन सबसे हमारा अनुरोध है कि अिस प्रयोगको अेक व्यापक परिमाणमें आजमानेका काम आज सर्व-सेवा-संघकी तरफसे हो रहा है, अुसको आजकी गतिसे ही होने दें। अिस रिसर्चमें यदि कोअी मदद कर सकें तो अुसकी हमें आवश्यकता है। जो कर सकें वे अिस काममें हमारी मदद करें, अैसी अुनसे हमारी प्रार्थना है। आम लोगोंसे हम कहेंगे कि ६-८ महीनेके लिअे अंबर चरखे खरीदनेकी वे अपेक्षा न रखें। यदि वह अेक अुपयोगी चीज सिद्ध होगा तो दुनियाके आगे आ ही जायगा।

मगनवाड़ी, वर्धा
४–७–'५५

अ० वा० सहस्रबुद्धे
मंत्री
अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ

हमारे विदेशी ग्राहकोंसे

कभी कभी हमें अपने विदेशी मित्रोंकी ओरसे 'हरिजन' साप्ताहिकोंके चन्देके रूपमें डाक द्वारा विदेशी मुद्राके नोट मिलते हैं। अपने बैंकर्सके जरिये रिजर्व बैंकसे हमें जानमेको मिला है कि विदेशी ग्राहकोंको अपना चन्दा बैंकों द्वारा ही भेजना चाहिये, क्योंकि डाक द्वारा नोट भेजनेमें विदेशी विनिमय नियंत्रण संबंधी नियमोंका भंग होता है।

अिसलिअे विदेशी मित्रोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे अपना चन्दा हमें डाकसे सीधा न भेजते हुअे बैंकों द्वारा ही भेजें।

१४–७–'५५

जीवणजी डा० देसाअी
व्यवस्थापक-ट्रस्टी

बुनियादी शिक्षा

गांधीजी

कीमत १–८–० डाकखर्च ०–६–०

सच्ची शिक्षा

गांधीजी

कीमत २–८–० डाकखर्च १–०–०

शिक्षाकी समस्या

गांधीजी

कीमत ३–०–० डाकखर्च १–२–०

विद्यार्थियोंसे

लेखक — गांधीजी; संपा० — भारतन् कुमारप्पा

कीमत २–०–० डाकखर्च ०–१२–०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद–१४

विषय–सूची

		पृष्ठ
दूसरी योजनाका छूटा हुआ पहलू	मगनभाई देसाई	१६१
गांव अेक परिवार बने	विनोबा	१६१
तीसरे सेक्टरके लिअे योजना	सी० के० नारायणस्वामी	१६२
गांवकी जमीन गांवकी हो	विनोबा	१६३
अगली शिक्षा-योजनाकी रूपरेखा	मगनभाई देसाई	१६४
सेवा और भक्ति	विनोबा	१६५
कागजी मुद्रा और बैंकोंकी माया	स्वामी आत्मानंद	१६६
आणविक शस्त्रास्त्र और मानव-सुख	आर० सन्तानम्	१६७
अम्बर-योजना व कार्य	अ० वा० सहस्रबुद्धे	१६७
टिप्पणी :		
हमारे विदेशी ग्राहकोंसे	जीवणजी डा० देसाअी	१६८

www.vinoba.in